बाल कविताएँ

रमेश चन्द्र गुप्त

बिन पानी सूखा ही सूखा

बिन पानी सूखा ही सूखा
तुम पानी से, हम पानी से
सांसों की सरगम पानी से।
पानी बिन सूखा ही सूखा
हरा-भरा मौसम पानी से।
पानी से नदियों में कल-कल
बूंदों की छम-छम पानी से।
बिन पानी के बीज न उगता
मिट्टी रहती नम पानी से।
बादल बरसे अगर धरा पर
आ जाता है दम पानी से।
हरा-भरा करता खेतों को
पानी का संगम पानी से।
पानी से मिलती है "O_2"
पाते जीव रहम पानी से।
जल से जमुना, जल से गंगा
झेलम भी झेलम पानी से।
पानी से ही शंख-सीपियां
शैवालों में दम पानी से।
जल से ही मछली का जीवन
जीवन का परचम पानी से।
सूखी रोटी गले न उतरे
होती सदा हजम पानी से।
पोखर झील जलाशय झरने
इनमें लौटे दम पानी से।
सूखे हुए कंठ में जल तो
हट जाता मातम पानी से।
बिन पानी के जीवन सूना
पाते जीवन हम पानी से।
खेत सूखता देख कृषक की
आंखें होती नम पानी से।
पानी होता जैसे अमृत
मिट जाता हर गम पानी से।
व्यर्थ न फैलाओ पानी को
काम चलाओ कम पानी से।
करना सीखो जल का संचय
पाओ तभी रहम पानी से।
पानी है अनमोल धरा पर
तुम पानी से, हम पानी से।

बादल भैया आ जाओ

चकवा बोला, चकवी बोली
बादल भैया आ जाओ,
सूखे ताल मेढ़की बोली
बादल भैया आ जाओ।
सूरज आँखें लाल दिखाता
धूप तमाचे जड़ती है
चाबुक जैसी मार सभी पर
अब तो लू की पड़ती है।
मुरझायी हर टहनी बोली
बादल भैया आ जाओ
फूल न खिलते तितली बोली
बादल भैया आ जाओ।।
बछड़ा भूखा, गैया भूखी
भैंस-बकरिया बहुत दुखी
बिन पानी के दिख रही है
पोखर-नदिया बहुत दुखी,
घास न दीखे खुरपी बोली
बादल भैया आ जाओ।
सूखी फसल धान की बोली
बादल भैया आ जाओ।।

मम्मी यदि मैं बादल होता

मम्मी यदि मैं बादल होता
सिर्फ वहीं पर जल बरसाता
जहां-जहां पर मरूस्थल होता।
जिसने गेंहू-धान उगाया
किन्तु नहीं अपने खेतों को
उचित समय पानी दे पाया,
उस किसान का सम्बल होता,
मम्मी यदि मैं बादल होता।
सागर से जल आता लेकर
रिमझिम-रिमझिम बारिश करता
नहीं सूखते नदिया-पोखर,
हरा-भरा हर जंगल होता
मम्मी यदि मैं बादल होता।
बेर, आम, ककड़ी की खेती
सेब, संतरा, केले, लीची
मनमाफिक ये धरती देती,
हर पल बहुत सुखद पल होता
मम्मी यदि मैं बादल होता

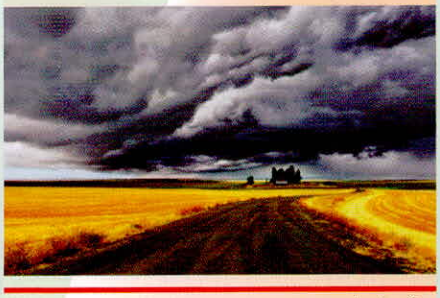

संपर्क करें:
रमेश चन्द्र गुप्त
15/109 ईसानगर, निकट थाना सासनी गेट,
अलीगढ़ - 202 001
ईमेल: rameshraj5452@gmail.com